...ना हो आगे
...जाओगे।

कविता उत्सव • एलबीएसएम कॉलेज में 18 भाषाओं के कवियों ने किया पाठ, कुलपति बोले

जो साहित्य, कला और संगीत को प्यार नहीं करता, वह पशु के समान होता है

सिटी रिपोर्टर | जमशेदपुर

संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेना दुर्लभ है। मनुष्य जन्म लेकर कवि होना और भी दुर्लभ है। शास्त्रों में कहा गया है- जो साहित्य, कला और संगीत को प्यार नहीं करता, वह सींग और पूंछ-विहीन पशु के समान होता है। कविता का करुणा से गहरा संबंध है। आदिकवि वाल्मीकि क्रौंच-वध से आहत होकर फूट-फूटकर रोये और उनके मुंह से कविता पंक्ति निकल गई। कविता की शुरुआत करुणा रस से हुई। वाल्मीकि के रामायण से ही प्रेरित होकर तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखा और दक्षिण भारत में कई रामायण लिखे गए। यह बातें कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गंगाधर पंडा ने शनिवार को एलबीएसएम कॉलेज सभागार में साहित्य एकेडमी और एलबीएसएम कॉलेज की ओर से आयोजित पहली पूर्वी क्षेत्रीय कविता उत्सव के उद्घाटन समारोह में कही। विशिष्ट अतिथि कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलसचिव जयंत शेखर ने भक्ति कविता की क्षमताओं की चर्चा करते हुए कहा कि आजादी के 75 साल बाद झारखंड में साहित्य एकेडमी की ओर से आयोजन होना अपने आप-में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भाषा अलग हो सकती है, पर वेदना और कविता अलग नहीं होती: मित्रेश्वर अग्निमित्र

कुलपति प्रो. पंडा का किया गया स्वागत।

कविता उत्सव के तीसरे सत्र के अध्यक्ष प्रो. मित्रेश्वर अग्निमित्र ने कहा- वेदना, ज्ञान और कविता के लिए जरूरी है। जो कवि नहीं है, कविता उनके भीतर भी होती है। भाषा अलग-अलग हो सकती है, पर कविता अलग नहीं होती, वेदना अलग नहीं होती। न्याय और क्रांति बिना कविता के नहीं होती।

उर्दू के शायर प्रो. अहमद बद्र ने गजलों ने खूब तालियां बटोरी

उर्दू के शायर प्रो. अहमद बद्र ने एक से बढ़ कर कविता और गजलें सुनाई। उनकी गजल छूने वाले के हाथ जलते हैं, चाहे अपनी हो या परायी आग, फूल ने चांदनी ने बारिश ने, किसने-किसने नहीं लगाई आग... ने खूब तालियां बटोरी। उपस्थित लोग वन्स मोर-वन्स मोर की आवाजें लगा रहे थे।

इन्होंने भी की शिरकत

कुसुम ठाकुर, विमल झा, एपली शुक्ला, डॉ अमर सिंह, पलसी दास, नगेश ठाकुर समेत शहर के कई साहित्यकार।